दहलीज़ से बाहर सामाजिक विज्ञान का संसार

अनिल सिंह

सामाजिक विज्ञान के कौशलों को हासिल करने के लिए दरअसल इसे पाठ्यपुस्तक और कक्षा शिक्षण के सीमित दायरे से बाहर निकालकर जीवन सन्दर्भों से जोड़ने और बच्चों की प्रत्यक्ष भागीदारी सुनिश्चित करने की ज़रूरत है। इस आलेख में अनिल सिंह ने बच्चों के साथ स्कूल के भीतर और बाहर के विविध मौक़ों व तरीक़ों का इस्तेमाल करके सामाजिक विज्ञान शिक्षण एवं उनमें विविध कौशल निर्माण के अनुभव प्रस्तुत किए हैं। इनमें विरासत, संसाधनों और घटनाओं के अवलोकन, परस्पर सम्पर्क-संवाद, आलोचनात्मक समझ और समाज में होने वाले परिवर्तनों की समझ के लिए बनने वाले मौक़े आदि शामिल हैं। -सं.

सामाजिक विज्ञान के अध्ययन के विषय मनुष्य और समाज हैं। ज़ाहिर है, तब सामाजिक विज्ञान के शिक्षण को कक्षा-कक्ष तक सीमित रखना उस विषय की प्रकृति के विपरीत होगा।

जानकारियों से लबरेज़ सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों को यदि कक्षा में सिर्फ़ पढ़े और अभ्यास प्रश्न कराए जाने के तौर पर इस्तेमाल किया गया तो सामाजिक विज्ञान शिक्षण से अपेक्षित कौशल हासिल करना न सिर्फ़ कठिन हो जाएगा, बल्कि यह बच्चों में विषय के प्रति लगाव भी पैदा नहीं कर सकेगा।

आनन्द निकेतन में हमने इस विषय पर काम करने के बुनियादी सिद्धान्त पर ध्यान दिया कि सामाजिक विज्ञान को स्कूल के बाहर की दुनिया व लोगों के असल जीवन से जोड़ना होगा और उसे बच्चों के प्रत्यक्ष अनुभव का मसला बनाना होगा।

इसके लिए हमने रोज़मर्रा के कामों, अनुभवों और अपने आसपास की दुनिया से जोड़कर सामाजिक विज्ञान शिक्षण के रास्ते निकाले। यहाँ मैं, इस आलेख में चार प्रकरणों का अनुभव रखना चाहूँगा :

गोपाल की दूध डेयरी

गोपाल हमारे स्कूल में कक्षा 6 में पढ़ने वाला बच्चा था। वह स्कूल के पास ही बनी बस्ती में अपने दादा-दादी के साथ रहता था। उसके दादा एक छोटी दूध डेयरी चलाते थे। उनके पास चार भैंसें और छह गायें थीं। गोपाल भी डेयरी के इस काम में अपने दादा-दादी की मदद करता था। सुबह अपनी साइकिल से दूध बाँटने के बाद ही गोपाल स्कूल आता। कभी-कभार कक्षा में बातचीत के दौरान डेयरी के कामकाज के बारे में थोड़ी-मोड़ी चर्चा उससे हो जाती थी। बच्चे भी स्कूल के पास की गोपाल की दूध डेयरी से मोटेतौर पर परिचित थे।

हमने कक्षा 6, 7 और 8 के 27 बच्चों को मिलाकर तीन समूह बनाए। इनमें 16 लड़कियाँ और 11 लड़के थे।

पहले समूह का काम तय हुआ कि गोपाल की दूध डेयरी में जाकर जानकारी दो तरीक़ों से इकट्ठा करें– सवाल पूछते हुए बातचीत करके और कुछ अवलोकन करके।

- बच्चों ने पूछे जाने वाले सवालों पर पहले चर्चा की, फिर उन्हें लिखकर फ़ाइनल किया।
- एक काग़ज़ पर प्रारूप बनाया जिसमें एकत्र की गई जानकारी दर्ज करनी थी।
- अवलोकन के लिए भी कुछ बिन्दु तय किए गए।


चित्र : हीरा धुर्वे

बच्चों के बनाए कुछ सवाल इस तरह रहे

- मवेशियों की संख्या : दुधारू / ग़ैर-दुधारू;
- प्रतिदिन बिकने वाले दूध की मात्रा : लीटर में;
- डेयरी से सीधे बिकने वाले दूध की मात्रा;
- घर-घर जाकर बाँटे जाने वाले दूध की मात्रा;
- दूध का वर्तमान बिक्री मूल्य;
- मवेशियों के पालन-पोषण पर दैनिक / मासिक होने वाला कुल ख़र्च, जिसमें चारा-भूसा, खली, दवाइयाँ, आदि शामिल हैं;
- महीने का आय-व्यय का ब्योरा।

अवलोकन के लिए तय हुए कुछ बिन्दु इस प्रकार रहे

- जगह कितनी और किस तरह की है;
- साफ़-सफ़ाई की स्थिति;
- आसपास का वातावरण;
- मवेशियों के रखे जाने, बाँधे जाने, नहलाने एवं खिलाने की व्यवस्था;
- मवेशियों का ऊपरी स्वास्थ्य;
- दूध निकालने एवं स्टोर करने के बर्तन।

दूसरे समूह का काम तय हुआ कि वे पता लगाएँ कि आसपास ऐसी कितनी दूध डेयरियाँ हैं। इसके अलावा, आसपास साँची मिल्क पार्लर कितने हैं। किसी एक पार्लर में जाकर वे प्रतिदिन औसत आने वाले और बिकने वाले दूध पैकेटों की जानकारी एकत्र करें। साथ ही, यह भी कि बच्चों के घरों में रोज़ाना कितना दूध इस्तेमाल होता है।

इसमें समूह के बच्चों को अपने घर के बड़ों की मदद भी लेनी थी, लेकिन एकत्र जानकारी को ख़ुद ही व्यवस्थित करना था।

तीसरे समूह को काम सौंपा गया कि वह पहले और दूसरे समूह द्वारा एकत्र की गई जानकारियों के आधार पर एक प्रतिवेदन तैयार करें और उसे कक्षा में प्रस्तुत करें। यदि समूह को कोई जानकारी समझ में नहीं आ रही है तो वे जानकारी जुटाने वाले समूह से बात करें।

उन्हें यह भी बताया गया कि प्रतिवेदन तैयार करने में शिक्षक उनकी मदद करेंगे।

एक सप्ताह में गोपाल की दूध डेयरी और आसपास के साँची मिल्क पार्लर की जानकारी इकट्ठा की गई। इस आधार पर रिपोर्ट भी बनी। उसे बनाने में हमने बच्चों की मदद की। कक्षा में रिपोर्ट प्रस्तुत की गई।

सीखने के मौक़े...

इस पूरी प्रक्रिया में बच्चों ने जो कुछ भी किया और सीखा, उसे सामाजिक विज्ञान शिक्षण के फ्रेम में हम इस तरह देख सकते हैं : अवलोकन, प्रश्न निर्माण, साक्षात्कार और बातचीत, विभिन्न तरीक़ों या स्रोतों से जानकारी एकत्र करना, सारणी बनाना, आँकड़े पढ़ना और उनका अर्थ बनाना, और रिपोर्ट तैयार करना व प्रस्तुत करना। इसके अलावा, समूह में काम करना, अपने आसपास चल रहे एक आजीविका प्रकल्प को जानना, उससे अपना जुड़ाव देख पाना, आदि भी बच्चे कर पाए।

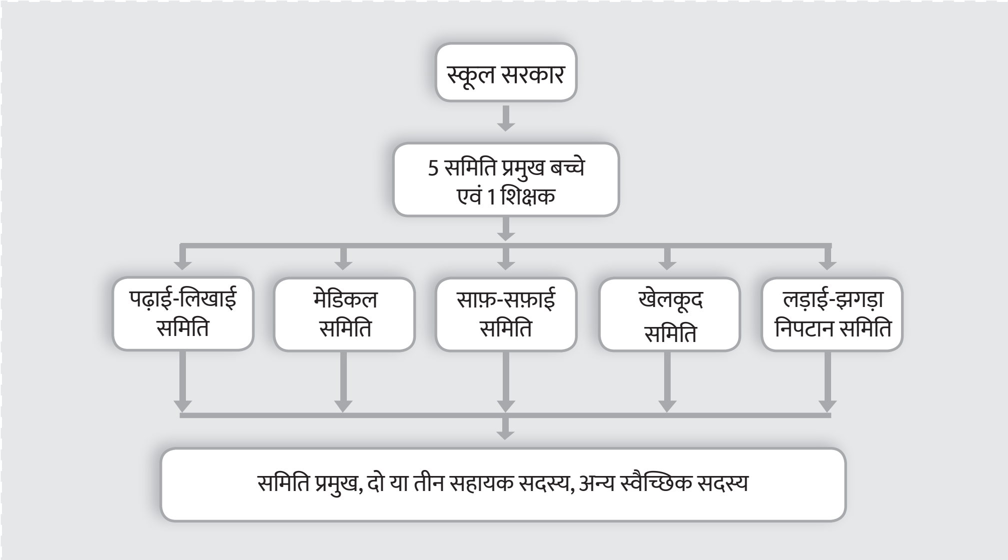
जो अतिरिक्त बातें बच्चों को मालूम हुईं, उनका ज़िक्र करना यहाँ ज़रूरी लगता है। एक बात यह कि, गोपाल के दादा-दादी रायसेन ज़िले के एक गाँव से पाँच साल पहले यहाँ आए थे। वहाँ उनकी थोड़ी-बहुत खेती रही है। वे यादव समाज से हैं और वहाँ कई पीढ़ियों से मवेशी पालते और दूध बेचते रहे हैं। ज़मीनी विवाद और पारिवारिक झगड़ों के चलते, वे कुछ मवेशी लेकर शहर आ गए और यहाँ बस्ती के पास ख़ाली ज़मीन पर झोपड़ी बनाकर डेयरी का काम शुरू किया। यह काम शुरू करना आसान न था। बस्ती के मुखिया को कुछ रुपए देने पड़े। पता चला कि पास की पुलिस चौकी का हवलदार मुफ़्त में रोज़ एक लीटर दूध लेता है। चार-पाँच महीने से धन्धा ठीक नहीं चल रहा और डेयरी के काम में उन्हें कोई ख़ास मुनाफ़ा नहीं हुआ। एक भैंस पिछली बारिश में बीमारी की वजह से चल बसी। बस खाना-ख़र्चा चलता है। पाँच सालों में सिर्फ़ दो भैंस और ख़रीद पाए हैं, यही उनका मुनाफ़ा है। ज़्यादा मवेशियों को रखने की जगह भी नहीं है। एक बार बड़ा-सा बाड़ा बनाया था, पर किसी की शिकायत पर नगर निगम वाले आकर तोड़ गए और पाँच हज़ार जुर्माने का चालान बनाया। ये बातें रिपोर्ट में आईं और सबके सामने साझा हुईं। यह असाइनमेंट बच्चों के लिए नए मसलों को समझने की शुरुआत बना। इन मसलों पर आगे की कक्षाओं में सन्दर्भ आने पर बात हुई।

बच्चों ने बताया कि उन्हें लगता था, डेयरी से बहुत मुनाफ़ा होगा क्योंकि बाज़ार में दूध चालीस-पचास रुपए लीटर मिलता है। पर यहाँ समझ में आया कि डेयरी चलाने में तो बहुत मुश्किलें हैं। मुनाफ़ा भी कुछ ख़ास नहीं है, जबकि काम बहुत करना पड़ता है। समाज और उसके विज्ञान की एक झलक इस बहाने मिली है बच्चों को।

स्कूल सरकार का गठन

उस समय शहर में नगर निगम चुनाव का माहौल था। कक्षा में भी किसी-न-किसी बहाने सरकार पर बात हो ही रही थी। एक कक्षा में बात यहाँ पर आई कि जैसे पूरे देश की एक सरकार है, अपने मध्यप्रदेश की एक सरकार है, वैसे ही शहर की व्यवस्था के लिए भी एक सरकार होती है। यही नगर निगम की सरकार है। गाँव में भी यह सरकार होती है, उसे वहाँ ग्राम पंचायत कहते हैं।

बच्चों का सवाल आया कि हमारे स्कूल की व्यवस्था के लिए भी सरकार बना सकते हैं क्या? हमने कहा, बिलकुल बनाई जा सकती है। वैसे तो एक व्यवस्था है ही जिसमें अलग-अलग विषय के शिक्षक, रसोई की व्यवस्था, खेल की व्यवस्था, साफ़-सफ़ाई सहायक, गार्डन सहायक और एक प्रिंसिपल हैं। मीटिंग होती हैं, योजना बनती है, हर रोज़ का टाइम टेबल तैयार होता है, वग़ैरह-वग़ैरह। यह भी तो सरकार की तरह ही एक व्यवस्था है। सभी शिक्षक और बच्चों की एक मासिक बैठक भी होती है, जिसमें हर तरह के मामले चर्चा में लाए जाते हैं।



लेकिन बच्चे दरअसल चुनाव की बात कर रहे थे। उनका सवाल था कि इसके लिए चुनाव कहाँ हुआ, वोट तो इसमें डाले ही नहीं गए!

इस तरह, एक स्कूल प्रबन्धन समिति नाम की स्कूल सरकार बनाने पर सहमति बनी, जिसमें बच्चे शामिल होंगे। उसके लिए चुनाव कराए जाने की बात तय हुई। धीरे-धीरे बात खुलती गई और व्यवस्था को समझने के लिए अलग-अलग तरह के कार्यक्षेत्र और ज़िम्मेदारियाँ पहचानी गईं। बच्चों के साथ गहन चर्चा के बाद पाँच समितियों के लिए चुनाव होना तय हुआ, जिनके समिति प्रमुखों को मिलाकर स्कूल सरकार बनाई जाने वाली थी।

बच्चों की तरफ़ से ही फ़ाइनल की गई जिन समितियों के प्रमुखों के लिए चुनाव किया जाना था, वो इस प्रकार थीं :

- पढ़ाई-लिखाई समिति;
- खेलकूद समिति;
- मेडिकल समिति;
- लड़ाई-झगड़ा निपटान समिति; और
- साफ़-सफ़ाई व्यवस्था समिति।

एक शिक्षक को बाक़ायदा चुनाव प्रभारी बनाया गया। बच्चों ने समितियों की ज़िम्मेदारी और काम के प्रति अपने रुझान के हिसाब से अपने नाम प्रस्तावित किए। इसके लिए विधिवत नामांकन फ़ॉर्म भरे गए।

तीन समितियों के लिए पाँच से ज़्यादा नामांकन आए। बाक़ी दो समितियों के लिए दो-दो नामांकन आए। इसके अलावा, यह तय हुआ कि समिति में प्रमुखों के अलावा काम में सहयोग के लिए कम-से-कम तीन और ज़्यादा-से-ज़्यादा पाँच सदस्य और शामिल होने चाहिए। इसके लिए लोग स्वेच्छा से अपने नाम दे सकेंगे।

बाक़ायदा मतदान की तारीख़ तय की गई। उम्मीदवारों ने स्कूल में अपने प्रचार के लिए रंग-बिरंगे पोस्टर बनाए। समिति का प्रमुख चुने जाने पर वे क्या-क्या नए काम करेंगे, इन्हें लेकर उनकी क्या योजना और दृष्टि है, इनपर उन्होंने सुबह की संगीत सभा में सबके सामने भाषण दिए। एक काग़ज़ पर लिखकर एक घोषणा-पत्र भी तैयार किया।

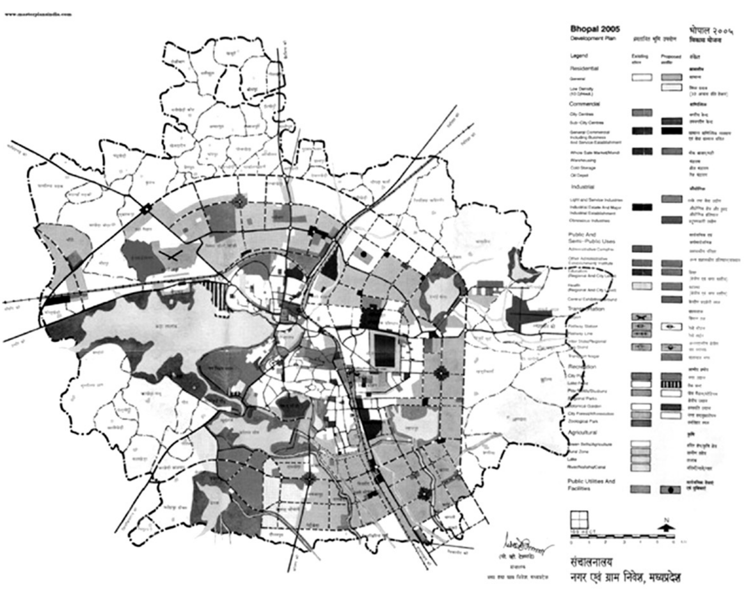
हमने कंप्यूटर से प्रिंट निकालकर मतपत्र बनाए। पतंग, चिड़िया, बॉल, पेंसिल और कप, पाँच उम्मीदवारों को ये पाँच अलग-अलग चुनाव

चिह्न वितरित किए गए। मतपत्र में समिति का नाम, समिति प्रमुख पद के लिए उम्मीदवार का नाम, उसका चुनाव चिह्न और फिर उसके आगे ख़ाली जगह छोड़ी गई, जहाँ मुहर लगानी थी। चित्रकारी वाली किट में एक छोटा स्टैम्प था, जिसपर हार्ट बना हुआ था। इंक पैड और इस स्टैम्प को चुनाव चिह्न पर मुहर लगाने के लिए इस्तेमाल किया गया।

मतदान के बाद मतपत्रों की गिनती करके चुनाव के नतीजे तैयार किए गए और फिर चुने गए समिति प्रमुखों के नाम की घोषणा की गई। पाँचों समिति प्रमुखों को बुलाकर निर्वाचन का प्रमाण-पत्र दिया गया। इन पाँच समिति प्रमुखों को मिलाकर स्कूल प्रबन्धन समिति बनाई गई, जिसमें मैं एक अतिरिक्त सदस्य के रूप में नामांकित किया गया। इस तरह छह सदस्यीय स्कूल सरकार बनी।

सीखने के मौक़े...

इस पूरी प्रक्रिया में कुछ महत्त्वपूर्ण बातें सामने आईं, जिनका सामाजिक विज्ञान शिक्षण के सन्दर्भ में अतिरिक्त महत्त्व है। बच्चों को लगा था कि कक्षा 1 से 5 के छोटे बच्चों को इसमें शामिल नहीं किया जाएगा। लेकिन यह तय हुआ कि इस स्कूल से जुड़े हर व्यक्ति को इस चुनाव में हिस्सा लेने का अधिकार है। उन्हें भी पूरी प्रक्रिया के बारे में बताया गया। इसी तरह, साफ़-सफ़ाई सहायक विनोद, छोटे बच्चों की देखरेख करने वाली सहायिका तारा और खाना पकाने वाली रामरती दीदी को भी वोट देने के लिए बुलाया गया।



शिक्षकों ने भी बराबरी से वोट डाला और सबके वोटों की गिनती एक पूर्ण वोट मानकर की गई।

अलग-अलग समितियों की क्या ज़िम्मेदारी होगी, यह बच्चों ने समूह चर्चा के माध्यम से तय किया। इस तरह सरकार के अलग-अलग विभाग व मंत्रालयों की व्यवस्था की और ज़िम्मेदारियों के बँटवारे की एक आधारभूत समझ बनी। सभी के वोट का बराबर मोल है। बच्चों ने भी वोट डाले जाने, नेताजी के उनके घर पर आने और वोट माँगने, भाषण देने और घर-घर परचे बाँटे जाने के अपने अनुभवों को इस प्रक्रिया से जोड़कर देखा।

बच्चों ने स्कूल सरकार गठन के माध्यम से लोकतंत्र और चुनाव का एक पाठ प्रायोगिक ढंग से सीखा।

एक नहर के बहाने

स्कूल के नज़दीक ही एक सीज़नल नहर बहती थी। कई बार भाषा की आउटडोर क्लास के लिए मैं बच्चों को लेकर पास के खुले मैदान या पहाड़ी पर चला जाता था। कई बार दोपहर

का खाना हमने वहीं खाया और लौटते समय काग़ज़ की नावें भी उस नहर में तैराईं।

एक कक्षा में हमने नहर के बारे में और जानने की योजना बनाई। दरअसल, खेती, सिंचाई, शहरी-ग्रामीण आजीविका, प्राकृतिक संसाधन, आदि टॉपिक हमारे पास थे। नहर का छोर पकड़कर हम उसके दोनों तरफ़ कोई आधा किलोमीटर गए और हमने देखा कई-कई जगह नहर से पम्प लगाकर दूर खेतों में पानी ले जाया जा रहा था। एक जगह नहर दो शाखाओं में बँट गई थी। कुछ जगह लोग नहा भी रहे थे। बाबा नगर के पास तो पूरा धोबी घाट ही लगा हुआ था।

स्कूल लौटकर हमारे पास जानने के लिए कुछ प्रश्न इस प्रकार थे :

- नहर कहाँ से निकलती है?
- नहर कहाँ-कहाँ जाती है? नहर की शाखाएँ कहाँ-कहाँ गई हैं? (उसका नक़्शा बनाना)।
- नहर से सिंचाई के लिए पानी लेना मुफ़्त है या कुछ शुल्क देना पड़ता है?
- नहर बनवाना और उसकी देखरेख करना किसकी ज़िम्मेदारी है?
- नहर किस-किस सीजन में चलती है?
- नहर कौन चलाता और बन्द करता है? नहर कहाँ से चलती और बन्द होती है?

हमने बच्चों को ज़िम्मेदारी दी कि वे पता लगाएँ कि ये नहर कहाँ-कहाँ गई है। इसके लिए सब अपने-अपने घरों में बात करें। इसके आधार पर हम इसका नक़्शा बनाएँगे। काम शुरू हुआ। एक रोज़ मैं कक्षा में भोपाल नगर निगम का नक़्शा लेकर गया जिसमें नहर भी बताई गई थी। हमने उसकी भी मदद ली।

हमने देखा कि हमारे स्कूल के नज़दीक वाली नहर दिसम्बर से शुरू होकर फरवरी तक चलती थी और मार्च में बन्द हो जाती थी। जून आते-आते तक वह पूरी तरह सूख जाती थी। जुलाई से बारिश शुरू होने पर यह फिर चलती थी और सितम्बर में उसमें थोड़ा पानी रहता था, पर तेज़ नहीं चलती थी। दिसम्बर से यह फिर तेज़ चलना शुरू हो जाती थी। नहर का यह चक्र जानना हमारे लिए इन्ट्रेस्टिंग था।

बच्चों की लाई हुई जानकारी के अनुसार, अक्टूबर-नवम्बर में गेहूँ की बुवाई होती थी। जब नवम्बर-दिसम्बर तक इसमें पौधे आ जाते हैं, तब दिसम्बर में नहर चलना शुरू होती थी। और खेतों को पानी मिलने लगता था। फरवरी में नहर बन्द हो जाती थी। फ़सल पक कर तैयार होती और मार्च में गेहूँ काट लिया जाता था। मानसून वाली फ़सल मक्का तो जुलाई, अगस्त, सितम्बर की बारिश के दम पर ही हो जाती थी। उस दौरान नहर नहीं चलती थी। तो नहर का चक्र फ़सल के चक्र से जुड़ा हुआ समझ में आया।



फ़ोटो : अनिल सिंह

मार्च में होली के समय जब थोड़ी गर्मी भी होती, हम यही सोचते कि नहर चलती तो एक रोज़ बच्चों को लेकर इसी में नहाने का प्लान करते। पर वह तो फरवरी में ही बन्द हो जाती और फरवरी तक थोड़ी ठण्ड बची रहती थी।

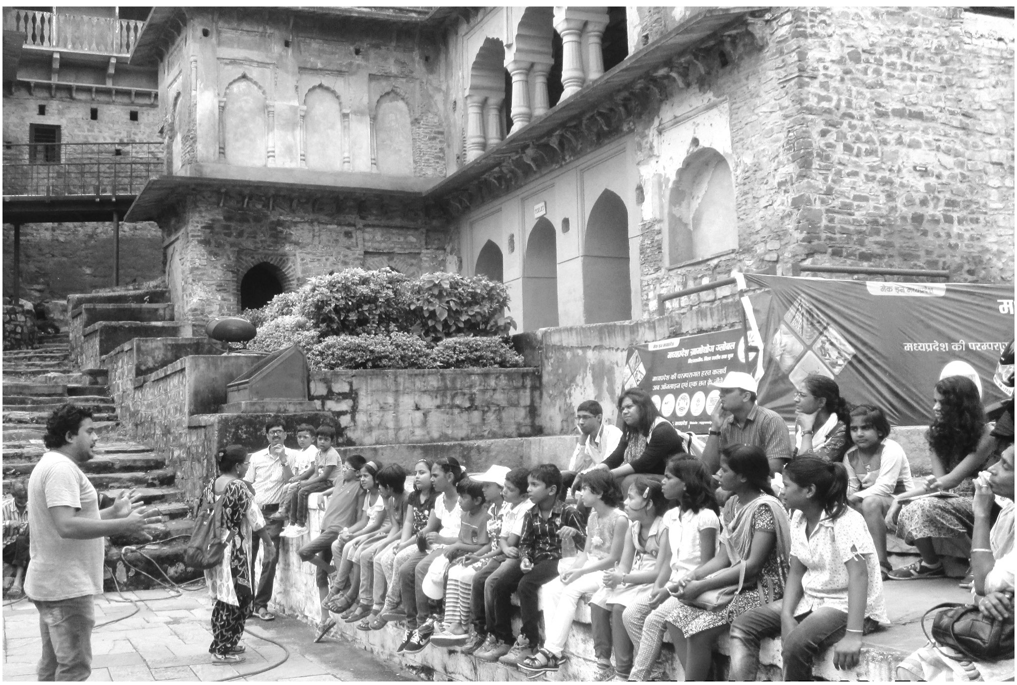
बच्चों की लाई जानकारी के अनुसार, एक तरफ़ तो ये कलियासोत बाँध से निकलकर शाहपुरा झील के बैक वाटर से मिलती हुई बाबा नगर, बावड़िया कला, सलैया होते हुए मिसरोद गाँव तक जाती थी। वहीं दूसरी तरफ़, यह कोलार की दिशा में बंजारी, हिनौतिया, गेहूँखेड़ा से लेकर कालापानी गाँव तक फैली थी।

सिंचाई विभाग के पास इसकी देखरेख और संचालन की ज़िम्मेदारी थी। कलियासोत बाँध पर एक गेट था जहाँ से इस नहर में पानी खोला जाता था। वहाँ के लिए एक कर्मचारी नियुक्त था। खेत के लिए नहर से पानी लेने पर कोई शुल्क नहीं था। किसान जो सालाना राजस्व कर जमा करते थे, उसी में सिंचाई का शुल्क भी शामिल था। बच्चों के लिए यह पूरी जानकारी बड़ी मज़ेदार थी।

सीखने के मौक़े...

सामाजिक विज्ञान शिक्षण की दृष्टि से इस काम के चलते आसपास की जानकारी होना, उसका अपने रोज़मर्रा के जीवन से सम्बन्ध देख पाना, अवलोकन, पूछताछ, दस्तावेज़, आदि के माध्यम से जानकारी इकट्ठी करना, नक़्शा बनाना, जानकारियों का सत्यापन करना जैसी कुछ चीज़ें, अपने प्रारम्भिक रूप में ही सही, हो पाईं।

बच्चों का सवाल था कि अभी तो कॉलोनियों के बीच-बीच में और शहर के किनारे बाहरी इलाक़ों में खेत बचे हुए हैं। लेकिन जब धीरे-धीरे सभी जगह घर बन जाएँगे और खेत ख़त्म हो जाएँगे, तब क्या ये नहर बन्द कर दी जाएगी? यह प्रश्न एक नए मसले की तरफ़ इशारा करता था जिसपर बाद की कक्षाओं में बात किया जाना तय हुआ।



फ़ोटो : अनिल सिंह

इतिहास के आईने में...

भोपाल एक ऐतिहासिक शहर है। वैसे हर इलाक़े का अपना एक स्थानीय इतिहास होता ही है। पिछले सौ सालों के बारे में तो लोग मौखिक ही जानते और बताते हुए मिल जाएँगे।

हमने आदि-मानव, हड़प्पा संस्कृति, राजा-महाराजाओं के समय, आदि के बारे में पढ़ा और बातें कीं। हमें लगा कि कुछ चीज़ें तो देखी भी जा सकती हैं। हम भीमबेटका के शैलचित्र देखने गए। मानव कभी जंगल में, गुफाओं में रहता था। उन गुफाओं की दीवारों पर बने चित्रों में बच्चों ने शिकार करने के दृश्य देखे, जो हज़ारों साल पहले के सच्चे प्रमाण थे।

भोपाल इतिहास के अध्येता और हेरिटेज वॉक के गाइड, सिकंदर मलिक, की मदद से बच्चों के साथ हमने रानी कमलापति महल, गौहर महल, ताजुल मसाजिद, सदर मंज़िल देखीं। गोल महल के बग़ीचे में बैठकर दोपहर का खाना खाया और वहाँ का म्यूज़ियम देखा। यहाँ भोपाल रियासत में तीन पीढ़ियों तक बेगमों का शासन रहा। किताबों में लिखा हुआ इतिहास इमारतों, मूर्तियों, तालाबों, तस्वीरों और संग्रहालयों में रखी प्राचीन पोशाकों, हथियारों, फ़र्नीचरों, बर्तनों और सिक्कों के रूप में हमारे सामने था।

सीखने के मौक़े...

इतिहास किताबों से पढ़ा और पढ़ाया जा सकता है। इसके अलावा, उसकी झलक देखी जा सकती है और उसे इस तरह समझा जा सकता है। पुरानी इमारतों और संग्रहालय की गैलरियों में समय का एक क्रम दिख रहा था, सिर्फ़ जानकारी भर नहीं थी अब ये। बच्चों ने भोपाल के इतिहास पर अपनी-अपनी अकार्डियन बुक तैयार की जिसमें तस्वीरों के साथ उन्होंने काल क्रम के अनुसार पूरा विवरण लिखा। दहलीज़ पारकर सामाजिक विज्ञान का संसार और फैल गया था। सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लिए हमारे पास ऐसे अनेक तरीक़े हैं। हमें उनके मौक़े बनाने हैं। ये सिर्फ़ चार उदाहरण भर हैं। आप हर रोज़ कुछ नया सोच सकते हैं और योजना के साथ बच्चों को उसमें सहभागी बनाकर उनके सीखने को मज़ेदार, प्रत्यक्ष और अर्थपूर्ण बना सकते हैं।

अनिल सिंह पिछले 20 बरसों से भी अधिक समय से सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं। गए 15 सालों से प्राथमिक शिक्षा ही उनका प्रमुख कार्यक्षेत्र है। सात सालों तक भोपाल में वैकल्पिक स्कूल के मॉडेल आनन्द निकेतन से जुड़े रहे हैं और वहाँ भाषा व सामाजिक विज्ञान शिक्षण का काम किया। वर्तमान में पराग के लाइब्रेरी एजुकेटर कोर्स में बतौर फ़ैकल्टी जुड़े हुए हैं।

सम्पर्क : bihuanandanil@gmail.com